रिकॉर्ड :– माता तू सबकी भाग्य विधाता..... ॐ पिताश्री 17/6/64
ओम् शांति। बच्चों ने अपनी माँ की महिमा सुनी। यूँ तो हर एक को अपनी माँ है, यह फिर है जगतअम्बा। तुम तो जानते हो यह किसकी महिमा है। जगतअम्बा का कितना बड़ा मेला लगता है। जगतअम्बा कौन है, यह तो कोई भी नहीं जानते। परमपिता प० अथवा ब्र०वि०शं० अथवा ल०ना० आदि यह जो सबसे ऊँच हैं, उन्हों की जीवन कहानी को कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। अभी तुम जानते हो जगतअम्बा है ब्रह्माकुमारी सरस्वती। जगतअम्बा को जितनी भुजाएँ आदि दिखाई हैं वो तो हैं नहीं। देवियों को भुजाएँ देते हैं। वास्तव में भुजा तो मनुष्य को दो ही होती हैं। प०पि०प० तो है निराकार। बाकी मनुष्यों को हैं दो भुजाएँ। स्वर्ग के ल०ना० को भी दो भुजाएँ हैं। सूक्ष्मवतन में तो हैं ब्र०वि०शं०। प्रवृत्तिमार्ग होने कारण दिखाया गया है, सूक्ष्मवतन में भी मम्मा–बाबा हैं। विष्णु का भी साक्षात्कार होता है– दो भुजाएँ लक्ष्मी कीं, दो भुजाएँ ना० कीं। बाकी मनुष्य की कोई चार भुजाएँ होतीं नहीं। यह तो सिर्फ समझाने के लिए विष्णु को चार भुजाएँ दिखाई हैं। वो देवियों को इतनी भुजाएँ देते हैं, वो हैं नहीं। सरस्वती, लक्ष्मी, काली आदि–2 अनेक चित्र बनाते हैं। वास्तव में कुछ भी है नहीं। ये हैं सब भक्तिमार्ग के अंलकार। तुम अभी भगत नहीं हो। तुम हो गॉड फादरली स्टूडेंट, पढ़ाई पढ़ रहे हो। भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देते हैं। भक्त तो है अंधश्रद्धा वाले, सबके चित्र रखते रहेंगे। कृष्ण का भी रखेंगे तो ल०ना० का भी रखेंगे। राम–सीता का भी रखेंगे। गुरुनानक, हनुमान आदि का भी रखेंगे। चूं–चूं का ..... होता है ना। ऑक्युपेशन तो कोई का भी जानते नहीं। मालूम होना चाहिए ना, इन्हों को हम क्यों पूजते हैं। भला इनमें ऊँच ते ऊँच कौन हैं! हनुमान बन्दर जैसा तो कोई होता नहीं। क्या–2 बैठ बताया है। भक्तों में मुख्य शिरोमणि भक्त दिखाते हैं नारद और फीमेल्स में शिरोमणि भक्त रखा है मीरा को। कहानी लिखी है जब लक्ष्मी का स्वयंवर होता था। अब स्वयंवर तो होता है सतयुग में। यह है नरक। यह एक दृष्टांत बताया जाता है। वास्तव में कोई एक की बात नहीं। द्रौपदी तो एक नहीं, इस समय के सब मेल्स–फीमेल्स, द्रौपदियाँ और दुर्योधन हैं। दुशासन, द्रौपदियों को नग्न करते हैं। बरोबर द्रौपदियाँ माताएँ पुकारती हैं– हे भगवान! नग्न होने से बचाओ। चित्रों में दिखाते हैं भगवान साड़ी देते जाते हैं। कहते हैं, 21 जन्म नग्न होने से बचाया। अभी बाप आए हैं सब द्रौपदियों की रक्षा करने। श्रीमत पर चलेंगे तो 21 जन्म कभी नग्न नहीं होंगे। वो है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। पूछते हैं– बाबा, हमको लक्ष्मी को वर सकेंगे? बाप कहते हैं– बच्चे, दिल दर्पण में देखो, हम लायक हैं। भक्त तो सब इस समय बंदर हैं ना; क्योंकि हर एक मनुष्य मात्र में पाँच विकार प्रवेश हैं। भारत में सम्पूर्ण निर्विकारी देवी–देवताएँ थे। अभी तो सम्पूर्ण विकारी हैं। सतयुग में तो एक बच्चा होता है, सो भी योगबल से पहले ही सा० होता है; जैसे तुम सा० करती हो, हम प्रिंस–प्रिंसेज़ बनेंगे। प्रिंस–प्रिंसेज़ की आपस में रास का भी सा० होता है कि हम भविष्य में ऐसे श्री कृष्ण साथ रास करेंगे। तो बाबा ने समझाया है, इतनी भुजाएँ वाली देवियाँ होती नहीं। ल०ना० को हैं दो भुजा। इनको विष्णु का अवतार कहा जाता है। देवी–देवता डिनायस्टी है ना। इसको कहा जाता है विष्णु डिनायस्टी। इसको महालक्ष्मी वा नर ना० कहते हैं। नर ना० के मंदिर में चतुर्भुज रूप दिखाते हैं। महालक्ष्मी को भी दिखाते हैं, लक्ष्मी का भी दिखाते हैं। लक्ष्मी को जगतअम्बा तो नहीं कहेंगे। लक्ष्मी तो कोई बी०के० नहीं है, बी०के० यहाँ हैं। सरस्वती भी गाई हुई है– ब्रह्मा की मुखवंशावली सरस्वती। बी०के० सरस्वती को कहा जाता है– जगतअम्बा। बरोबर तुम जानती हो, प्रजापिता ब्रह्मा की हम मुखवंशावली हैं। एक है वो कलियुगी ब्राह्मण, दूसरे हो तुम संगमयुगी ब्राह्मण। वो ब्राह्मण हैं जिस्मानी यात्रा कराने वाले कुखवंशावली, तुम बने हो मुखवंशावली। तुम रूहानी यात्रा कराने वाले हो। तुम सब ब्रह्मा मुख

वंशावली, जाकर मनुष्य से देवता बनते हो। उनमें मुख्य है मम्मा, जिसकी ही इतनी महिमा है। वो है स्वर्ग की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करने वालीं। तुम भी इनकी संतान ठहरे। जगतअम्बा राजयोग सीखती है, जिससे 21 जन्म स्वर्ग के मालिक बनते हो। इसलिए इनका गायन है शिव शक्ति सेना। लक्ष्मी है महारानी। उनको एक बच्चा होता है। प्रजापिता ब्रह्मा और जगतअम्बा को तो कितने ढेर के ढेर बच्चे हैं। तो जगदअम्बा को भी दो भुजा हैं, वैसे ही ल०ना० को भी दो भुजाएँ हैं। चित्रों में तो बहुत हंगामा कर दिया है। कब ना० को काला, लक्ष्मी को गोरा बना देते। ऐसे तो हो नहीं सकता, ना० साँवरा हो और लक्ष्मी गोरी हो वा कृष्ण साँवरा और राधे गौरी हो। बाप बैठ समझाते हैं इस समय सभी साँवरे हैं। तुम स्वर्ग में पवित्र थे तो गोरे थे, फिर काम–चिक्षा पर बैठने से काले हो गए हो। कृष्ण को श्याम–सुंदर कहते हैं। सुंदर है सतयुग–त्रेता में, फिर 84 जन्म भोगते–2 अंत में आकर श्याम बने हो। कृष्ण की आत्मा पुनर्जन्म लेती रहती है, फिर वो नाम थोड़े ही रहता है। इस समय वो आत्मा तमोप्रधान अवस्था में है। सतयुगी आदि में हैं देवी–देवताएँ। वो ही 84 जन्म लेंगे। यह है 84 जन्मों का चक्कर।

तुम बच्चों ने मम्मा की महिमा सुनी। मम्मा की महिमा अलग है, लक्ष्मी की महिमा अलग है। तो चित्र कैसे–2 बैठ बनाए हैं! काली की ऐसी जीभ दिखाते हैं। ऐसा तो कोई मनुष्य होता नहीं। सूक्ष्मवतन में भी ऐसे काले तो हैं नहीं, ब्र०वि०शं० हैं। शंकर–पार्वती दिखाते हैं। विष्णु तो है ही युगल। ब्रह्मा–सरस्वती को भी तुम सूक्ष्मवतन में देखते हो, फिर कहते, ऐसे भयानक कहाँ से आए! काली का रूप बहुत भयानक दिखाते हैं। ऐसी कोई शक्ति थोड़े ही होगी, वायोलेंस वाली हिंसक। हर एक बात के लिए बाप समझाते रहते हैं। किस्म–2 के चित्र हैं; परन्तु मनुष्य तो मनुष्य ही होते हैं। सूक्ष्मवतन में हैं ब्र०वि०शं०। उनसे ऊपर है मूलवतन, जहाँ शिव और सालिग्राम रहते हैं। बस, और कुछ भी नहीं है। बाकी इतने चित्र आदि सब हैं भक्तिमार्ग की सामग्री। सतयुग–त्रेता में यह होती नहीं। ज्ञान और भक्ति। ज्ञान अर्थात दिन, भक्ति है रात। ब्रह्मा का दिन ज्ञान, ब्रह्मा की रात भक्ति। सतयुग–त्रेता है दिन, द्वापर–कलियुग है रात। अब है घोर अंधियारी रात, फिर दिन होना है। बाप कहते हैं, मेरा जन्म होता ही है संगम पर– कलियुग का अंत घोर अंधियारा, सतयुग की आदि घोर सोझरा। संगम पर ही आकर मैं तुमको समझाता हूँ। अब इतने जो भक्तिमार्ग में चित्र हैं, मुख्य तो है शिवबाबा पतित–पावन। ल०ना०, सीता–राम आदि सब इस समय अन्तिम जन्म में पतित हैं। यह है ही पतित दुनिया। अगर शिवबाबा न आता तो सब वर्थ नॉट ए पैनी होते। बलिहारी शिवबाबा की जो हम पतितों को पावन बनाते हैं। इस समय सब तमोप्रधान, पतित हैं। सब दुखी हैं। पहले पावन आत्मा आती है तो सतोप्रधान है, फिर सतो–रजो–तमो में आना पड़ता है। हर चीज़ का ऐसे होता है। छोटा बच्चा भी सतोप्रधान होता है। इसके लिए भी कहते हैं– ब्रह्मज्ञानी और बालक एक समान है। फिर सतो, रजो, तमो में आना ही है। फिर चेंज करना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। दुनिया भी सतोप्रधान थी, अब तमोप्रधान है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बाप ही बना सकते हैं। बाप को न जानने कारण सबको याद करते रहते। कितने चित्र बनाते हैं; परन्तु उनमें भी हर एक का कोई मुख्य ज़रूर होता है। जैसे बाबा के पास भी बहुत चित्र रहते थे, उनमें भी मुख्य श्री ना० का था। सिक्ख धर्म का होगा तो भल शिव का, ल०ना० का, राम–सीता आदि रखा होगा, तो भी गुरुनानक को अधिक याद करेंगे। ऊँच ते ऊँच भगवत तो है एक। उनकी महिमा भी लिखी हुई है– सत् नाम कर्ता, पुरख, अकालमूर्त..... सतयुग आदि सत्, है भी सत् अर्थात् यह जो चक्कर है ..... फिर यह चक्कर ज़रूर लगावेंगे। यह सब बाप बैठ समझाते हैं। भक्तिमार्ग में गोरे कृष्ण का मंदिर अलग, साँवरे कृष्ण का मंदिर अलग दिखाते हैं। कहाँ फिर शिव का भी रखते तो ल०ना० का भी रखते हैं। ऑक्युपेशन को तो जानते नहीं। बाप आकर तुम बच्चों को सृष्टि चक्र के

आदि–मध्य–अंत का राज़ समझाए, स्वदर्शन चक्रधारी बनाए, तुमको चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। भल तुम हो सब गृहस्थी, फिर भी पढ़ाई का कोर्स उठाते हो। बुढ़ियों से भी पूछो, तुम कहाँ जाती हो? तो कहेंगी– हम भगवान के कॉलेज में जाती हैं। भगवानुवाच्य, हम तुमको सो देवी–देवता बनाता हूँ। भगवान पढ़ाते हैं भगवान–भगवती बनाने; परन्तु ऐसे नहीं कि सतयुग में सबको भगवान–भगवती का राज्य कहेंगे। नहीं, वो है आदि सनातन देवी–देवताओं का राज्य। भल विलायत वाले कहते हैं– लॉर्ड कृष्ण, भगवान कृष्ण; परन्तु जानते नहीं हैं। दिलवाला मंदिर जैसा एक और भी पुराना मंदिर नीचे हैं। अमेरिकन लोग जब देखते हैं कि यह तो देवताओं के चित्र हैं, तो एक का .... लाख.....रुपया देते हैं। प्राचीन चीज़ देखते हैं, इस दरवाज़े का क्या देंगे? 5 लाख रुपया देने को तैयार होते हैं, तो भी देते नहीं हैं। पुरानी चीज़ हैं ना! पुरानी ते पुरानी, 5000 वर्ष की बात है। सबसे पुराने तो देवी–देवताओं के चित्र हुए। भक्तिमार्ग में कितने चित्र बनाते हैं। भक्तिमार्ग जब शुरू हुआ तब उन्हों(ने) सोमनाथ का मंदिर बनाया। बाप समझाते हैं, भारतवासी कितने साहुकार थे, अब तो भारत नर्क बन गया है। बिल्कुल भिखारी कंगाल बन गए हैं। ऐसे भारत को फिर से हिस्ट्री रिपीट होनी चाहिए। तुम बच्चों को सारी बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी का पता है। सतयुग में देवताओं को पता नहीं होगा। यह ज्ञान फिर प्रायःलोप हो जाता है। वहाँ कोई पतित होते नहीं जो ज्ञान दिया जाए। यह नॉलेज ही प्रायःलोप हो जाती। फिर गीता कहाँ से आई? वो सब भक्तिमार्ग के शास्त्र आदि बने हुए हैं। नई दुनिया के लिए तो ज़रूर नई नॉलेज होगी ना। इस्लामी नॉलेज थी क्या! इब्राहिम आया तो आकर इस्लाम धर्म स्थापन किया, नॉलेज दी। नई बात हुई ना। यहाँ यह गीता, रामायण आदि सब झूठे हैं। बहुत झूठे कलंक लगाए हैं। बाप कहते हैं, मेरी ग्लानि नम्बरवन करते हैं, सर्वव्यापी कह देते। जब ऐसी ग्लानि होती है, भारतवासी महान दुखी बन जाते हैं, तब मैं आता हूँ। इस समय सब पतित हैं। सबको, सारे विश्व को पावन बनाने मैं ही आता हूँ; इसलिए पतित दुनिया का विनाश कराय पावन दुनिया की स्थापना कराता हूँ। इस पुरानी दुनिया को तुम भूल जाओ। मनमनाभव। बाप और वर्से को याद करो। तुम यह राज्य योग सीख कर फिर से सो देवता बनते हो। यह है राजयोग सीखने की गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। इतनी बड़ी कॉलेज, हॉस्पिटल है; परन्तु तुमको 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलते। बाप कहते हैं, हम तुमको सारे विश्व का मालिक बना रहा हूँ। मुश्किलात से यह मकान बनाया है। हमको 3 पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते। यह है हॉस्पिटल कम यूनिवर्सिटी। हॉस्पिटल और यूनिवर्सिटी। हॉस्पिटल से हेल्थ और यूनिवर्सिटी से वेल्थ मिलती है। बाप कहते हैं हम पढ़ाने आए हैं; परन्तु 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलते। मैं हूँ ही गरीब निवाज़। कन्याएँ–माताएँ बिल्कुल गरीब होती हैं। इनके हाथ कुछ भी नहीं रहता। बाप का वर्सा बच्चों को मिलता है। वास्तव में स्त्री को हाफ पार्टनर कहा जाता है; परन्तु बनती कहाँ है! भारत में हिन्दू नारी को कहते, तुम्हारा पति ही गुरु, ईश्वर, सब कुछ है; परन्तु हाफ पार्टनर को ऐसा थोड़े ही करना चाहिए– मैं गुरु, ईश्वर हूँ और तुम दासी हो। अब बाप आकर दासीपने से छुड़ाते हैं। पहले लक्ष्मी फिर नारायण। तो यह भी कॉलेज है ना।

अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बाप–दादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार, गुडमॉर्निंग।

मधुबन स्वर्गाश्रम से सभी सेन्टरों के स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण कुल भूषणों प्रति करोलबाग के प्रेम प्रकाश की ईश्वरी(य) मधुर यादप्यार स्वीकार हो।